



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सादाबाद उत्तर प्रदेश क हाथरस जिले में माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच की चुनौतियाँ

गुंजन सिंह¹, प्रो० कविता कन्नोजिया²

शोधकर्त्ती¹ पर्यवेक्षक²

समाजशास्त्र विभाग, किशोरी रमन गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मथुरा

डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय से संबद्ध, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सार

सादाबाद उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में माध्यमिक शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्राप्त करने में आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों की जाँच करता है, जिसमें पहुँच और गुणवत्ता में असमानताओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के 2030 तक सार्वभौमिक शिक्षा के दृष्टिकोण के बावजूद, माध्यमिक शिक्षा, शुद्ध नामांकन अनुपात (एनईआर), स्कूल छोड़ने की दर और औसत वार्षिक प्रति छात्र व्यय जैसे प्रमुख मानकों में प्राथमिक शिक्षा से काफी पीछे है। विश्लेषण कई परस्पर जुड़ी बाधाओं की पहचान करता है, जिनमें सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की सीमित आपूर्ति, परिवारों के लिए उच्च प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लागत, और प्राथमिक स्तर की तुलना में माध्यमिक क्षेत्र में लगातार कम सार्वजनिक निवेश शामिल हैं। इसके अलावा, शिक्षकों के उच्च पद रिक्त होना, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा और व्यावसायिक कौशल विकास का अभाव जैसे प्रणालीगत मुद्दे इस समस्या को और बढ़ा देते हैं। कि माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिकता देने वाले महत्वपूर्ण नीतिगत बदलाव, सार्वजनिक वित्त पोषण में पर्याप्त वृद्धि और गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढाँचे और शासन में सुधार के ठोस प्रयास के बिना, सार्वभौमिक माध्यमिक शिक्षा का लक्ष्य पहुँच से बाहर ही रहेगा।

शब्दकुँजी : माध्यमिक शिक्षा, सार्वभौमिक पहुँच, शैक्षिक चुनौतियाँ, शैक्षिक समानता

प्रस्तावना

भारत की नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 2030 तक शिक्षा का सार्वभौमिक पहुँच का लक्ष्य रखा गया है। हालाँकि, प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन तो अधिक है, लेकिन माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच और उसका उपयोग कम ही रहा है। बोरदोलोई और पांडे कुछ कारकों पर विचार करते हैं, जिनमें माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों की सीमित संख्या, स्कूली शिक्षा की उच्च लागत और शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण में सार्वजनिक निवेश की कमी शामिल है। वे माध्यमिक शिक्षा पर केंद्रित नीति पर अधिक ध्यान देने का आह्वान करते हैं।

1990 के दशक से लेकर अब तक, दशकों से, भारत की शिक्षा नीतियाँ प्राथमिक शिक्षा और बाद में प्रारंभिक शिक्षा तक पहुँच में सुधार पर केंद्रित रही हैं। यह केंद्र सरकार के कार्यक्रमों जैसे जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP), सर्व शिक्षा अभियान (SSA), और हाल ही में समग्र शिक्षा की एकीकृत केंद्र प्रायोजित योजना के साथ-साथ राज्य सरकारों द्वारा इसी तरह की पहलों के माध्यम से किया गया है। बच्चों के निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार (RTE) अधिनियम 2009 के अधिनियमन सहित इन हस्तक्षेपों ने भारत को प्राथमिक शिक्षा तक लगभग

सार्वभौमिक पहुँच प्राप्त करने में मदद की है। हालाँकि, इस प्रक्रिया में माध्यमिक शिक्षा को वह ध्यान नहीं मिला है जिसके वह हकदार है, और इसकी पहुँच अपेक्षाकृत खराब बनी हुई है।

गुणवत्तापूर्ण माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने के लिए 2009 में शुरू किए गए राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) ने "2017 तक माध्यमिक स्तर की शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच और 2020 तक सार्वभौमिक प्रतिधारण" का वादा किया था। हालाँकि, शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय आर्थिक विकास और उपलब्धियों के बावजूद, यह उद्देश्य अभी भी अधूरा है (तिलक 2020)। 2020 में जारी भारत की नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) ने स्कूली शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की परिकल्पना की है और 2030 तक पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्चतर माध्यमिक तक सभी स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण और समान शिक्षा तक पहुँच को सार्वभौमिक बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। हालाँकि, देश में माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति और उससे जुड़ी कई चुनौतियों को देखते हुए, एनईपी के इस दृष्टिकोण को साकार करना बहुत कठिन लगता है।

शोध उद्देश्य

1. परिवारों के लिए माध्यमिक शिक्षा की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लागतों का विश्लेषण करना और स्कूल छोड़ने में एक वित्तीय बाधा के रूप में इसकी भूमिका का मूल्यांकन करना।
2. राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर प्राथमिक शिक्षा की तुलना में माध्यमिक शिक्षा के लिए आवंटित सार्वजनिक व्यय के अनुपात की जाँच करना।
3. गुणवत्तापूर्ण माध्यमिक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण इनपुट की पर्याप्तता का मूल्यांकन करना, जिसमें शिक्षकों की रिक्रियाँ, शिक्षक प्रशिक्षण और बुनियादी ढाँचे (पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशालाएँ, कंप्यूटर, खेल के मैदान) की उपलब्धता शामिल है।
4. माध्यमिक स्तर पर उच्च ड्रॉपआउट दर के पीछे सामाजिक-आर्थिक कारणों (जैसे, घरेलू काम में व्यस्तता, शिक्षा के मूल्य की कमी) की जाँच करना।

क्रियाविधि

- उत्तर प्रदेश के डेटासेट का मिश्रित-विधि विश्लेषण
- असमान राज्यों का तुलनात्मक केस अध्ययन

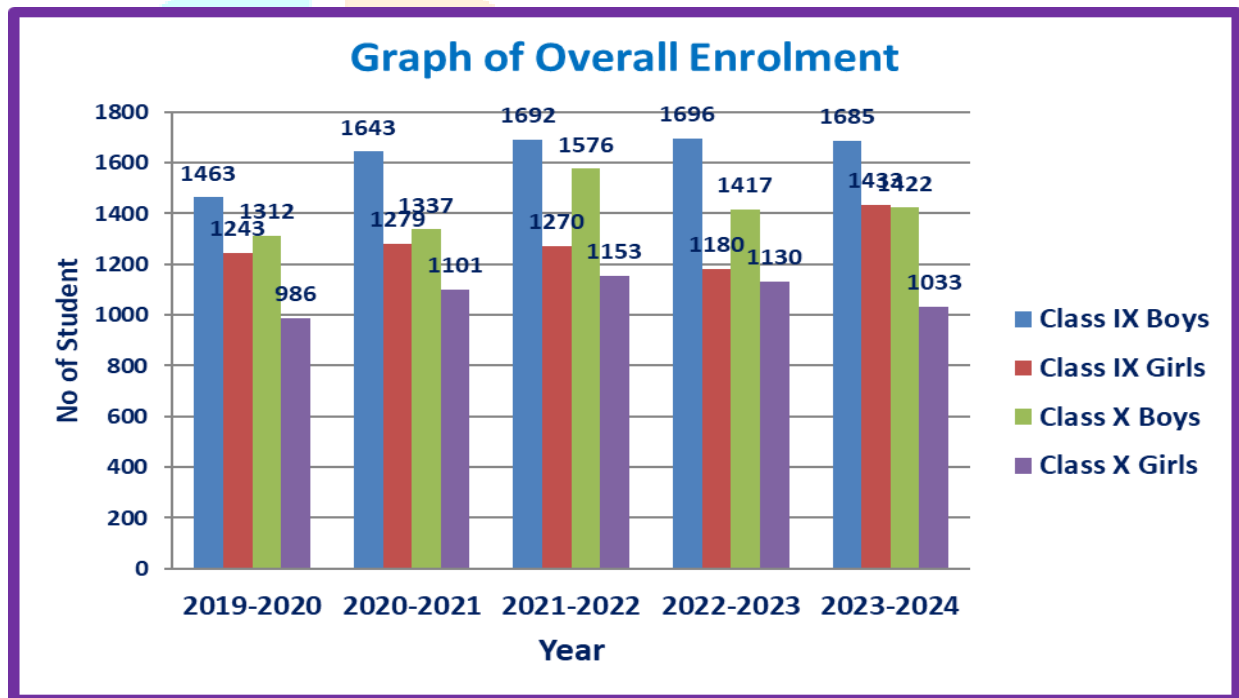
माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति

यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन-प्लस (यूडीआईएसई-प्लस) के नवीनतम आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2020-21 के दौरान, माध्यमिक (कक्षा 9 और 10) शुद्ध नामांकन अनुपात (एनईआर) जो एक विशेष स्तर पर आयु-उपयुक्त नामांकन पर विचार करता है, माध्यमिक और उच्च-माध्यमिक स्तरों के लिए क्रमशः 53% और 35% पर बहुत कम था, जबकि यह प्राथमिक स्तर पर 92% था। यह एक बड़ी चिंता का विषय है, क्योंकि वर्तमान में 14 से 17 वर्ष की आयु के आधे से अधिक बच्चे सादाबाद उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में माध्यमिक शिक्षा तक नहीं पहुँच पा रहे हैं। इसके अलावा, प्राथमिक स्तर के विपरीत, उच्च स्तर पर एनईआर में राज्यों में व्यापक भिन्नताएँ हैं (उदाहरण के लिए, जबकि बिहार में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर एनईआर 2020-21 में 18% था, तमिलनाडु और हिमाचल प्रदेश में क्रमशः 47% और 57% था)।

तालिका संख्या 1

माध्यमिक विद्यालय स्तर पर समानता और समावेशन की स्थिति : तालिका संख्या-1 कक्षा IX और X दोनों में समग्र नामांकन

वर्ष (Year)	कक्षा (Class IX)	छात्र (Boys)	छात्राये (Girls)	कक्षा (Class IX)	छात्र (Boys)	छात्राये (Girls)	Transitions Crap (IX-X)
2019-2020	2706	1463	1243	2298	1312	986	-
2020-2021	2422	1643	1279	2438	1337	1101	268
2021-2022	2962	1692	1270	2724	1576	1153	193
2022-2023	2876	1696	1180	2547	1417	1130	415
2023-2024	3118	1685	1433	2455	1422	1033	421



चित्र संख्या 1 – 1 कक्षा IX और X दोनों में समग्र नामांकन

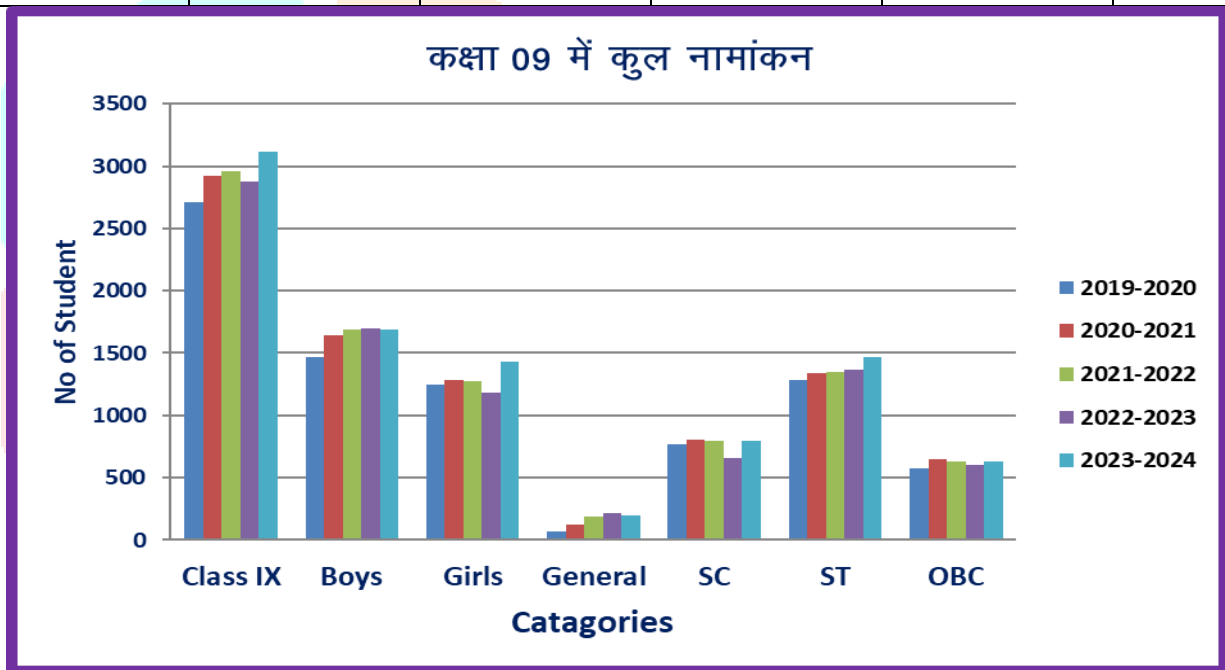
तालिका 1 से पता चलता है कि वर्ष 2019-2020 में कक्षा IX में 2706 छात्र नामांकित हैं। जिनमें लड़के (1463) और लड़कियां (1243) हैं और कक्षा X में 2298 छात्र नामांकित हैं। जिनमें (1312) और लड़कियां (986) हैं। लेकिन अगर हम 2019-20 के नामांकन से तुलना करें तो यह दर्शाता है कि पिछले वर्ष की तुलना में नामांकन में वृद्धि हुई है और साथ ही लिंग के हिसाब से भी। हालांकि, कक्षा IX और कक्षा X के नामांकन के बीच एक बड़ा संक्रमणकालीन अन्तर है। (2020-2021) में 268 और 2023-2024 में (421) क्योंकि यह वर्ष दर वर्ष कम और बढ़ा है। इसी तरह, लिंग वार अन्तर के मामले में भी, यानी कक्षा IX में, 2019-2020 में लड़के और लड़कियों के बीच 220 अंतर थे और 2023-2024 में 252 अंतर थे। तो यह निष्कर्ष निकलता है कि समग्र नामांकन दर कक्षा IX और X में स्वतंत्र रूप से बढ़ रही है। लेकिन जब कक्षा IX और X तक निरंतरता की बात आती है, तो लगातार गिरावट होती है। जिससे संक्रमणकालीन (Transitional gap) उत्तर के रूप में जाना जाता है। लड़कियों के छात्रों की तुलना में

दोनों कक्षाओं में लड़कों का नामांकन अधिक है और कक्षा IX में 2019–2020 में 220 और 2023–2024 में 252 और कक्षा X 2019–2024 में 389 जैसे अंतर हैं।

तालिका संख्या-2

कक्षा IX में कुल नामांकन (श्रेणी वार)

(Categories)	2019-2020	2020-2021	2021-2022	2022-2023	2023-2024
Class IX	2706	2922	2962	2876	3118
Boys	1463	1643	1692	1696	1685
Girls	1243	1279	1270	1180	1433
General	69	120	183	217	199
SC	769	807	792	661	797
ST	1283	1342	1352	1365	1471
OBC	575	648	625	601	633



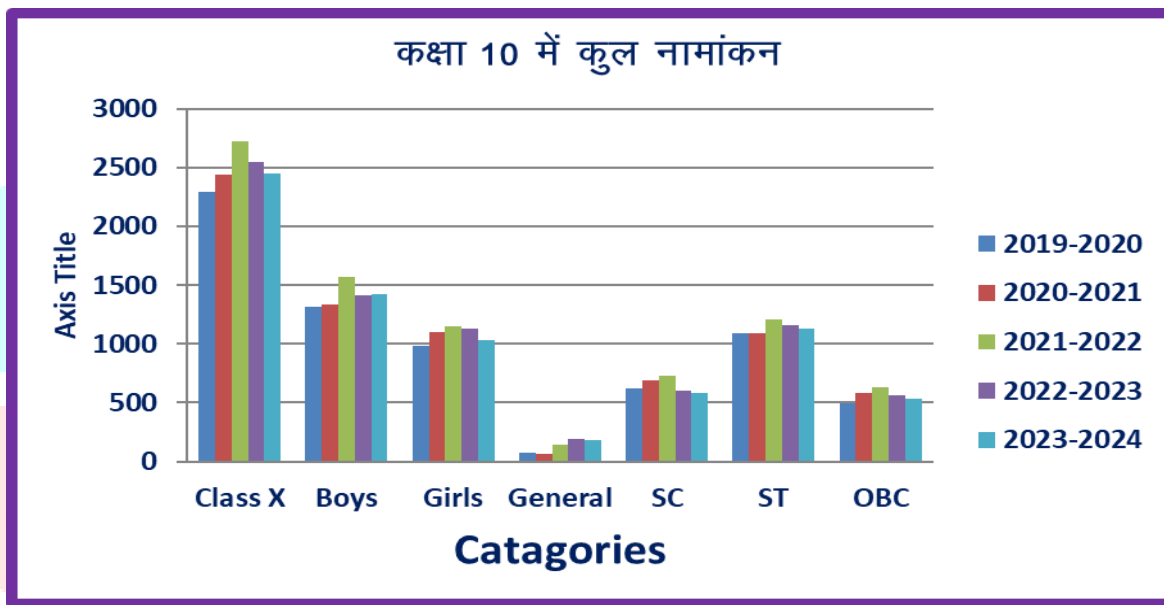
चित्र-2 कक्षा 09 में कुल नामांकन

तालिका संख्या-2 के आंकड़ों से स्पष्ट है कि कक्षा IX का कुल नामांकन 2019–2020 से बढ़ रहा है। यानी 2023–2024 में 2706 छात्र और 3118 छात्र हो गये हैं। साथ ही लिंग के आधार पर भी। इसके अलावा यह पता चला कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन सबसे अधिक है। (2019–2020 में 1283 छात्र और 2023–2024 में 1471 छात्र) और साथ ही अन्य श्रेणियों के छात्रों की तुलना में साल दर साल बढ़ रहा है। इसके बाद अनुसूचित जाति के छात्रों का नामांकन है। यानी 2019–2020 में 769 छात्र और 2023–2024 में 797 छात्र।

ग्राफ यह भी दर्शाता है कि सामान्य श्रेणी में नामांकन दर साल दर साल ऊपर-नीचे होती है। इसीलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन अन्य श्रेणियों के छात्रों की तुलना में सबसे अधिक है और इसके बाद अनुसूचित जाति के छात्र अन्य पिछड़ा वर्ग, सामान्य, अल्पसंख्यक और विविध आवयकता वाले बच्चों की श्रेणी के छात्र हैं।

तालिका संख्या 3
कक्षा X में कुल नामांकन (श्रेणी वार)

(Categories)	2019-2020	2020-2021	2021-2022	2022-2023	2023-2024
Class X	2298	2438	2720	2547	2455
Boys	1320	1335	1570	1417	1422
Girls	986	1103	1150	1130	1033
General	78	68	147	194	186
SC	619	686	726	602	579
ST	1090	1087	1210	1159	1131
OBC	498	584	634	563	530



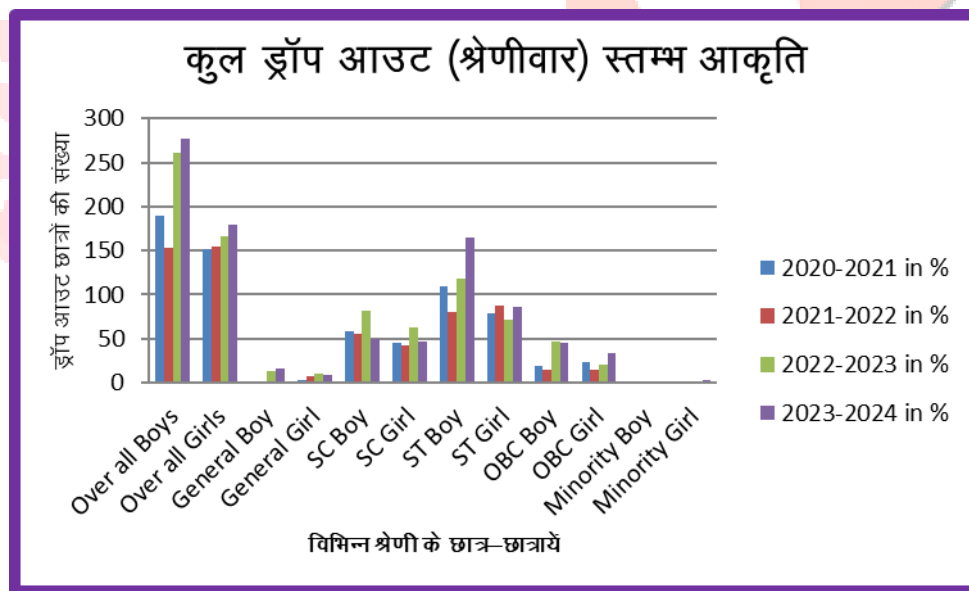
चित्र 3 संख्या कक्षा x में कुल नामांकन (श्रेणीवार)

तालिका 3 के आंकड़ों से पता चलता है कि कक्षा X का समग्र नामांकन 2019-2020 से बढ़ रहा है। यानी 2023-2024 में 2298 छात्र और 2455 छात्र हो गये हैं। साथ ही लिंग के हिसाब से भी वर्ष 2021-2022 और 2022-2023 को छोड़ कर। क्योंकि 2022-2023 में 2720 नामांकित छात्र थे, और 2022-2023 में 2720 नामांकित छात्र थे, और 2022-2023 में 2547 छात्र नामांकित थे; जो कि 2019-2020 और 2023-2024 की तुलना में लिंग के हिसाब से लगभग सबसे अधिक नामांकन हैं। इसके अलावा यह पता चला है कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन सबसे अधिक है (2019-2020 में 1090 छात्र और 2023-2024 में 1131 छात्र) और साथ ही अन्य श्रेणियों के छात्रों की तुलना में साल दर साल बढ़ रहा है। ग्राफ यह भी दर्शाता है कि अनुसूचित जाति में नामांकन दर साल दर साल बढ़ कर ऊपर-नीचे होती रही है। इसीलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कक्षा X में नामांकन दर 2019 से 2024 तक लगातार नहीं बढ़ रही है। विशेष रूप से वर्ष 2021-2022 में नामांकन दर अन्य वर्षों की तुलना में अधिक है। अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन अन्य श्रेणियों के छात्रों में सबसे अधिक है और इसके बाद अनुसूचित जाति के छात्र, अन्य पिछड़ा वर्ग, सामान्य की श्रेणी के छात्र हैं। इसके बाद प्रत्येक श्रेणी में कमी आई है। इसीलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सादाबाद ब्लॉक के माध्यमिक विद्यालयों में अवधारण दर ऊपर और नीचे है।

तालिका संख्या 4

कुल ड्रॉप आउट (श्रेणीवार)

(Categories)	2020-2021 in %	2021-2022 in %	2022-2023 in %	2023-2024 in %
Over all Boys	190	153	261	277
Over all Girls	152	154	166	179
General Boy	2	1	13	16
General Girl	3	8	10	9
SC Boy	59	56	82	50
SC Girl	46	43	63	47
ST Boy	109	81	118	165
ST Girl	79	88	72	86
OBC Boy	19	15	47	46
OBC Girl	24	15	21	34
Minority Boy	0	0	1	0
Minority Girl	0	0	0	3



चित्र संख्या-4 कुल ड्रॉप आउट (श्रेणी वार)

उपरोक्त आंकड़ा तालिका 4 से पता चलता है कि सादाबाद क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में ड्रॉप आउट दर 2020-2021 से 2023-2024 तक साल-दर-साल बढ़ रही है। इसके अलावा यह संकेत दिया गया है कि अनुसूचित जनजाति श्रेणी के छात्रों में अन्य श्रेणियों के छात्रों की तुलना से सबसे अधिक ड्रॉपआउट दर है। ग्राफ यह भी दर्शाता है कि छात्राओं की तुलना में विशेष रूप से ST लड़कों में ड्रॉपआउट दर सबसे अधिक हैं।

माध्यमिक शिक्षा के लिए कम सार्वजनिक प्रावधान

2023–24 में, सादाबाद उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले के माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम द्वारा कोई दूरी मानदंड निर्दिष्ट नहीं किया गया है, समग्र शिक्षा योजना, किसी बस्ती से पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित स्कूलों के मानदंड का समर्थन करती है, जब तक कि कोई राज्य अपने स्वयं के मानदंडों को अधिसूचित न करे। इस प्रकार, माध्यमिक विद्यालयों की सीमित भौतिक पहुँच छात्रों के लिए विशेष रूप से कठिन भौगोलिक और दूरदराज के क्षेत्रों में लड़कियों के लिए—सुरक्षा चिंता का विषय है क्योंकि उन्हें माध्यमिक विद्यालय तक पहुँचने के लिए बहुत लंबी दूरी तय करनी पड़ती है।

यह पता चला कि 2023–24 के दौरान, सादाबाद उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले के 80% में एक किलोमीटर के दायरे में प्राथमिक विद्यालय थे, जबकि 75% में पाँच किलोमीटर के दायरे में माध्यमिक विद्यालय थे। हालाँकि, माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों में से 43% निजी और गैर-सहायता प्राप्त थे। सरकार द्वारा माध्यमिक विद्यालयों की यह सीमित व्यवस्था, विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए, जो सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली पर अधिक निर्भर हैं, प्रवेश में बाधा उत्पन्न करती है।

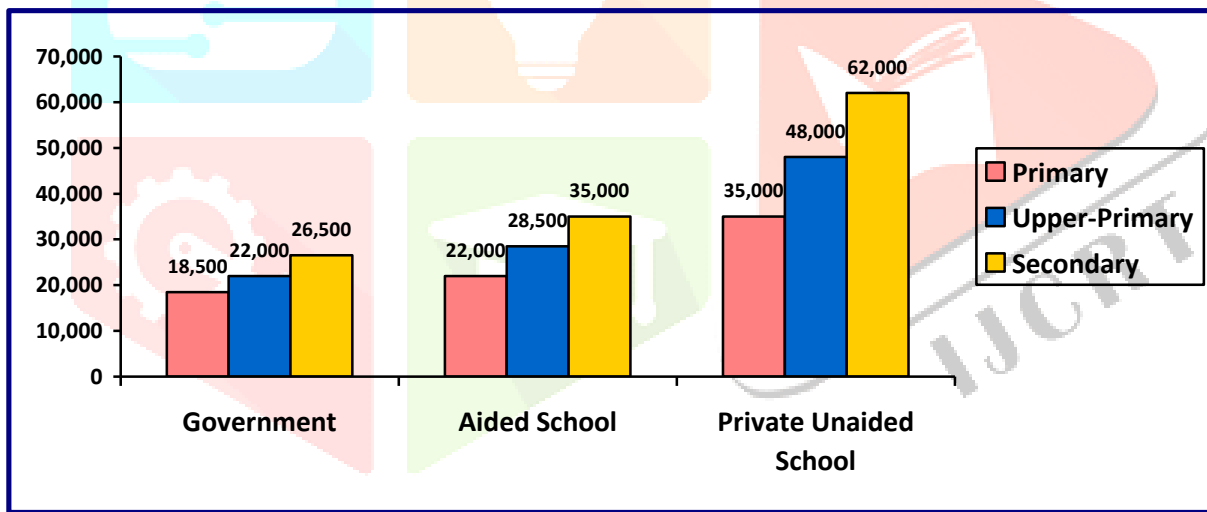
माध्यमिक शिक्षा की उच्च लागत

औसतन, परिवारों को प्राथमिक शिक्षा की तुलना में माध्यमिक शिक्षा तक पहुँचने के लिए बहुत अधिक खर्च करना पड़ता है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएस) के घरेलू सर्वेक्षण डेटा के विश्लेषण से पता चला है कि, 2023–2024 के दौरान, स्कूलों की एक विशेष श्रेणी में, माध्यमिक शिक्षा की लागत प्रारंभिक शिक्षा की तुलना में कहीं अधिक है। सरकारी स्कूलों में भी, चूंकि प्रारंभिक शिक्षा मुफ्त है, इसलिए परिवारों को वित्तीय बोझ में अचानक वृद्धि महसूस होती है क्योंकि बच्चे प्राथमिक से माध्यमिक में जाते हैं। 2023–2024 के दौरान, सरकारी स्कूलों में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के लिए प्रति छात्र औसत व्यय क्रमशः प्राथमिक की तुलना में तीन और पांच गुना अधिक था (तालिका 5, आरेख 5 देखें)। प्राथमिक स्कूली शिक्षा की तुलना में माध्यमिक स्तर पर निजी कोचिंग पर अपेक्षाकृत अधिक खर्च से भी काफी वित्तीय बोझ पैदा होता है, चाहे स्कूल का प्रकार कुछ भी हो।

तालिका 5

2023–2024 में शिक्षा स्तर और स्कूल के प्रकार के अनुसार स्कूली शिक्षा पर औसत वार्षिक प्रति छात्र व्यय

शिक्षा का स्तर (Education Level)	School type		
	सरकारी स्कूल (Government School)	सहायता प्राप्त स्कूल (Aided School)	निजी गैर-सहायता प्राप्त स्कूल (Private Unaided School)
प्राथमिक (Primary & Classes 1–5)	18,500	22,000	35,000
उच्च प्राथमिक (Upper Primary & Classes 6–8)	22,000	28,500	48,000
माध्यमिक (Secondary & Classes 9&10)	26,500	35,000	62,000



चित्र संख्या-5 2023–2024 में शिक्षा स्तर और स्कूल के प्रकार के अनुसार स्कूली शिक्षा पर औसत वार्षिक प्रति छात्र व्यय

इस प्रकार, माध्यमिक स्तर पर स्कूली शिक्षा की उच्च लागत कई परिवारों के लिए अपने बच्चों को प्राथमिक स्तर से आगे की शिक्षा जारी रखने देने के लिए एक चुनौती पेश करती है। सादाबाद ब्लॉक के आंकड़े शिक्षा पर होने वाले खर्च में महत्वपूर्ण असमानताओं को उजागर करते हैं। जहाँ निजी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों पर परिवारों द्वारा किया जाने वाला निवेश काफी अधिक है, वहीं सरकारी स्कूल प्रति छात्र कम लागत पर शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। यह अंतर शिक्षा की गुणवत्ता, सुविधाओं और अंततः सीखने के परिणामों में अंतर का एक प्रमुख संकेतक हो सकता है। इससे शिक्षा क्षेत्र में सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में निवेश और नीति निर्माण पर महत्वपूर्ण सवाल उठते हैं। हमने 14 से 17 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों द्वारा किसी भी स्तर के स्कूल न जाने के लिए बताए गए कारणों पर गौर किया।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के आधार पर, 2023–24 के दौरान, 31% बच्चों द्वारा उद्धृत प्रमुख कारणों में से एक, घरेलू आय में वृद्धि के लिए काम में संलग्नता थी। जबकि 25% ने बताया कि वे घरेलू कामों में भाग लेने के लिए स्कूल से दूर रहते हैं, अन्य 18% ने सोचा कि शिक्षा आवश्यक नहीं है। यह माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के महत्व के बारे में परिवारों में जागरूकता की कमी को भी दर्शाता है।

स्कूली शिक्षा में अपर्याप्त सार्वजनिक निवेश

सादाबाद उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति को प्रभावित करने वाला एक अन्य व्यापक कारक इस क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश का निम्न स्तर है। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से शिक्षा पर कुल व्यय, सकल घरेलू उत्पाद के हिस्से के रूप में 2021–22 (शिक्षा मंत्रालय, 2022) के लिए 4.39% था, जो कि 1966 में कोठारी आयोग द्वारा 1986 तक प्राप्त किए जाने वाले 6: निवेश लक्ष्य (शिक्षा मंत्रालय, 1966) से काफी कम है। जबकि राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इस हिस्से का कोई ब्योरा नहीं है, राज्य बजटों के विश्लेषण से संकेत मिलता है कि स्कूली शिक्षा पर अधिकांश व्यय प्रारंभिक शिक्षा के लिए समर्पित है। 2018 में समग्र शिक्षा की एकीकृत योजना के शुभारंभ के बाद भी, जिसमें एसएसए, आरएमएसए और शिक्षक शिक्षा की पूर्व योजनाएं शामिल थीं, स्थिति में शायद ही कोई बदलाव आया है। उदाहरण के लिए, बिहार और मध्य प्रदेश ने 2019–20 में स्कूल शिक्षा वित्त का 60% से अधिक हिस्सा प्राथमिक शिक्षा पर खर्च किया (बोर्डोर्लोई एट अल. 2020)।

एनईपी 2020 की परिकल्पना के अनुसार, माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से कौशल विकास को शामिल करने के लिए बड़े निवेश की भी आवश्यकता है। इससे उन लोगों की रोजगार क्षमता में सुधार हो सकता है जो माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद कार्यबल में प्रवेश करना चाहते हैं, और आगे की पढ़ाई करने के इच्छुक लोगों के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश की सुविधा (भंडारी एट अल. 2020)। अच्छी गुणवत्ता वाली माध्यमिक शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए अन्य बुनियादी लेकिन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में पर्याप्त संख्या में योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता, स्कूल में बुनियादी ढांचा सुविधाएं और एक कुशल निगरानी प्रणाली के साथ एक ठोस नियामक तंत्र शामिल हैं। दुख की बात है कि सादाबाद अभी भी इन मोर्चों पर पीछे है। उदाहरण के लिए, 2023–24 में सरकारी स्कूलों में शिक्षकों के कुल स्वीकृत पदों में से माध्यमिक स्तर पर 19% और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 24% पद खाली थे। वास्तव में, 2023–24 में एनएसएस शिक्षा सर्वेक्षण में पाया गया था कि माध्यमिक स्तर पर बच्चों को निजी स्कूलों में भेजने के लिए परिवारों द्वारा बताया गए दो सबसे प्रमुख कारण सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता से असंतोष और पास में कोई सरकारी माध्यमिक विद्यालय न होना थे। माध्यमिक विद्यालय भी अपर्याप्त बुनियादी सुविधाओं या उनकी निम्न गुणवत्ता से ग्रस्त हैं। हालाँकि स्कूल भवन, पेयजल और शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता के मामले में स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन खेल के मैदान, कंप्यूटर और रैंप के मामले में स्थिति अभी भी चिंताजनक है।

निष्कर्ष

देश के लिए माध्यमिक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दृष्टिकोण और उसकी वर्तमान स्थिति से तुलना करते हुए, यह उचित समय है कि केंद्र और राज्य सरकारों, दोनों की वार्षिक शिक्षा योजना में माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिकता देकर, इस पर नीतिगत ध्यान केंद्रित किया जाए। किफायती माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित करने

के लिए सार्वजनिक निवेश में पर्याप्त वृद्धि की जानी चाहिए। शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने, शिक्षकों को प्रशिक्षित करने, पर्याप्त शिक्षण-अधिगम संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने और एक जवाबदेह एवं पारदर्शी शासन संरचना के निर्माण के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार पर भी समान ध्यान दिया जाना चाहिए। जब तक कठोर कदम नहीं उठाए जाते, 2030 तक सार्वभौमिक माध्यमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करना असंभव बना रहेगा।

नोटः

शुद्ध नामांकन दर (एनईआर) किसी विशेष स्तर के स्कूल में उस स्तर के लिए निर्धारित आधिकारिक आयु-वर्ग में नामांकित बच्चों की संख्या है, जो उस आयु-वर्ग के कुल बच्चों के अनुपात के रूप में होती है। विभिन्न स्कूली शिक्षा स्तरों के लिए एनईआर की गणना हेतु आयु-वर्ग इस प्रकार हैं:

(i) प्राथमिक: 6 से 10 वर्ष, **(ii) उच्च-प्राथमिक:** 11 से 13 वर्ष, **(iii) माध्यमिक:** 14 से 15 वर्ष, और **(iv) उच्चतर माध्यमिक:** 16 से 17 वर्ष। परिवारों द्वारा शिक्षा पर व्यय में पाठ्यक्रम शुल्क, पुस्तकें, स्टेशनरी, गणवेश, परिवहन, निजी कोचिंग और अन्य विविध व्यय शामिल हैं।

संदर्भ

1. भंडारी, बी, सी जैन और ए साहू (2020), 'शिक्षित बेरोजगारों का लुप्त मध्य: भारत में माध्यमिक शिक्षा पर एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य', जे तिलक (सं.), भारत में सार्वभौमिक माध्यमिक शिक्षा।
2. बोरदोलोई, एम, एस पांडे, वी इरावा और आर जुन्नारकर (2020), 'राज्य शिक्षा वित्त: आठ राज्यों में स्कूल शिक्षा वित्त में गहन विश्लेषण', जवाबदेही पहल, नीति अनुसंधान केंद्र।
3. शिक्षा मंत्रालय (1966), 'शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, 1964-66, खंड 4: योजना, प्रशासन, वित्त', शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
4. शिक्षा मंत्रालय (2022), 'शिक्षा पर बजटीय व्यय का विश्लेषण 2017-18 से 2019-20', शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
5. तिलक, जे (2020), 'भारत में सार्वभौमिक माध्यमिक शिक्षा: मुद्दों, चुनौतियों और संभावनाओं का एक परिचयात्मक अवलोकन। भारत में सार्वभौमिक माध्यमिक शिक्षा', जे तिलक (सं.), भारत में सार्वभौमिक माध्यमिक शिक्षा में
6. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा सलाहकार बोर्ड (2005)। माध्यमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण: केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा सलाहकार बोर्ड की रिपोर्ट। नई दिल्ली: भारत सरकार।
7. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी)। (2015ए)। प्री-स्कूल और माध्यमिक शिक्षा में आरटीई के विस्तार पर सीएबीई उप-समिति। 2015-17 (ड्राफ्ट पेपर)। (नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय) नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय)